SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति

सुरेखा जवादे, पी–एचडी, हिन्दी, शिक्षा विभाग
सेंट थॉमस महाविद्यालय, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुरेखा जवादे, पी–एचडी
E-mail : surekhabhilaistc@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/09/2025
Revised on : 20/11/2025
Accepted on : 29/11/2025
Overall Similarity : 00% on 21/11/2025

शोध सार

भारत विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का देश है। इन्हीं विविधताओं में जनजातीय समुदायों की अपनी विशिष्ट पहचान और जीवन शैली है। भारत के कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियां लगभग 8.6 प्रतिशत हिस्सा रखती है। प्रकृति के साथ सामंजस्य, सामुदायिक जीवन, सरलता और पारंपरिक मान्यताएँ इनके समाज की मुख्य विशेषताएँ हैं। इन जनजातीय समुदायों में महिलाओं की स्थित भारतीय मुख्यधारा समाज से काफी भिन्न दिखाई देती है। कुछ क्षेत्रों में वे अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र, सम्मानित और महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, जबकि कई जगहों पर उन्हें सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ता है। इसमें भारतीय जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनकी भूमिकाएँ, समस्याएँ तथा सशक्तिकरण से जुड़े प्रयासों पर विस्तृत चर्चा की गई है। भारतीय जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति बहुआयामी है। जहाँ परम्परागत रूप से उन्हें सम्मान, स्वतंत्रता और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त है, वहीं आधुनिक समय में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, भूमि अधिकार और विकास के अवसरों की कमी ने उन्हें कई चुनौतियों के बीच ला खड़ा किया है। जनजातीय समाज में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान हैं, जहाँ वे पारंपरिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाती है। वे कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन और हस्तशिल्प जैसे कार्यो के माध्यम से परिवार और समुदाय की आर्थिक स्थिति को मजबूत करती हैं। कुछ जनजातियों में मातृसत्तात्मक संरचना भी पाई जाती है, जहाँ महिलाओं को संपत्ति और पारिवारिक निर्णयों में विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं। हालाँकि, शिक्षा की कमी, सीमित स्वास्थ्य सुविधाएँ, लैंगिक असमानता और सामाजिक कुरीतियाँ उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। बंगाला साहित्यकार

महाश्वेता देवी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी अग्रणी भूमिका अदा की। समाज की मुख्यधारा से अनभिज्ञ आदिवासी समुदाय के साथ वर्षो तक बिहार और बंगाल के घने कबायली इलाकों में रही हैं, उन्होंने अपनी रचनाओं में इन क्षेत्रों के अनुभव को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ उभारा है। उनका विशिष्ट क्षेत्र है दलितों और साधनहीनों के हृदयहीन शोषण का चित्रण और इसी संदेश को वे बार–बार सही जगह पहुँचाना चाहती हैं ताकि अनन्त काल से गरीबी–रेखा से नीचे साँस लेने वाली विराट मानवता के बारे में लोगों को सचेत कर सकें। यह विषय जनजातिय महिलाओं का शोषण, सामाजिक और आर्थिक स्थिति और उनके सामने आने वाली चुनौतियों और उनके उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों का विश्लेषण करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और कानूनी सहायता के विस्तार से जनजातीय महिलाओं की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है, जिससे वे आत्मनिर्भर और सशक्त बन सकेंगी।

मुख्य शब्द

प्रामाणिकता, सामाजिक कुरीतियाँ, आत्मनिर्भर, मुख्यधारा.

भूमिका

जनजातीय समाज भारत की विविध सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन समाजों में महिलाओं की भूमिका विशिष्ट और महत्वपूर्ण मानी गई है। हालाँकि, उनकी स्थिति विभिन्न जनजातियों में भिन्न हो सकती है, लेकिन आम तौर पर वे पारंपरिक रीति–रिवाजों, सामाजिक व्यवस्थाओं और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

जनजातीय महिलाओं की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

परंपरागत रूप से उनकी स्थिति मजबूत प्रतीत होती है, पर आधुनिक परिवर्तनों और विकास प्रक्रियाओं ने कई चुनौतियाँ पैदा की दी है। शिक्षा की कमी जनजातीय क्षेत्रों की सबसे बड़ी कमजोरी है जिसमें स्कूलों की दूरी, भाषा संबंधी कठिनाइयाँ, आर्थिक परेशानियाँ, बाल विवाह, घर के कार्यो में लग जाना आदि इन सभी कारणों से जनजातीय महिलाओं की शिक्षा पर असर पड़ता है साथ ही जनजातीय क्षेत्रों का भौगोलिक अलगांव, सरकारी योजनाओं की जानकारी, परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता को सीमित कर देता है। परिणामस्वरूप महिलाएँ अक्सर अंध्विश्वासों, कुप्रथाओं और अनभिज्ञता से जुझती है। आर्थिक शोषण और संसाधनों का संकट भी देखा गया है, जिसमें वनाधिकार कम होने के कारण महिलाएँ अपने जीवन यापन के पारंपरिक साधनों से वंचित हो रही हैं। बाजार और बिचौलियों के शोषण के चलते उन्हें उचित मूल्य नहीं मिलता।

पारंपरिक और सामाजिक स्थिति

जनजातीय महिलाओं की पारंपरिक भूमिका मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रह और धरेलू कार्यों से जुडी होती हैं। वे परिवार और समुदाय की संरचना में अहम भूमिका निभाती हैं। कुछ जनजातियों में मातृसत्तात्मक व्यवस्था भी देखने को मिलती है, जहाँ संपत्ति और पारिवारिक अधिकार महिलाओं के पास होते हैं, जैसे कि मेघालय की खासी जनजाति। यह भारत के उत्तर–पूर्वी हिस्से में बसने वाली एक प्रमुख जनजातीय समूह है। यहाँ पुरूष नहीं, बल्कि महिलाएँ पारिवारिक संपत्ति की उत्तराधिकारी होती है और कई मामलों में आर्थिक रूप से स्वतंत्र भी होती हैं।

आर्थिक योगदान

जनजातीय महिलाएँ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहायक होती हैं। वे खेतों में काम करने, शिल्पकारी, मछली पकड़ने और जंगल से औषधीय पौधों तथा अन्य संसाधनों को इकट्ठा करने जैसे कार्यो में संलग्न रहती हैं। कई महिलाएँ हस्तशिल्प और पारंपरिक बुनाई कार्य में भी संलग्न होती हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं।

शिक्षा और सशक्तिकरण

हाल के वर्षो में सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के कारण जनजातीय महिलाओं की शिक्षा दर में सुधार हुआ है फिर भी, साक्षरता दर अभी भी मुख्यधारा की तुलना में कम हैं। शिक्षा के अभाव में कई महिलाएँ आधुनिक समाज की मुख्यधारा की तुलना में कम हैं। शिक्षा के अभाव में कई महिलाएँ आधुनिक समाज की मुख्यधारा से दूर रह जाती हैं और उन्हें अपने अधिकारों की पूर्ण जानकारी नहीं होती है।

स्वास्थ्य सेवाएँ

जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुपोषण, प्रसवकालीन जटिलताएँ और संक्रामक रोग जैसी समस्याएँ आम हैं। इसके अलावा, बाल विवाह और बहुविवाह जैसी कुरीतियाँ भी कुछ जनजातियों में प्रचलित है, जिससे महिलाओं के अधिकार सीमित हो जाते हैं।

अधिकार और कानूनी पहल

सरकार ने जनजातीय महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कई कानून बनाए हैं, जैसे कि अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकार अधिनियम, 2006) आदि। इन कानूनों का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं को भूमि, संसाधनों और शासन में अधिक भागीदारी देना है।

आधुनिकता और परिवर्तन

आधुनिकता के दौर में वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से जनजातीय महिलाओं की जीवनशैली में भी बदलाव आ रहा है। अब वे शिक्षा, राजनीति और नौकरी के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। कुछ जनजातीय महिलाएँ विभिन्न सरकारी और गैर– सरकारी संगठनो से जुड़कर सामाजिक जागरूकता बढ़ा रही हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं।

सरकारी योजनाएँ और सहायता

सरकार द्वारा अधिनियम एवं अन्य कानून लागू किए गए हैं, जो उनके अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण में सहायक हैं। वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से जनजातीय महिलाओं की जीवनशैली में बदलाव आ रहा है। वे शिक्षा, राजनीति और विभिन्न व्यवसायों में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं, जो उनके सशक्तिकरण में सहायक हैं। सरकारी योजनाएँ और सहायता में सरकार ने जनजातीय महिलाओं की उन्नति के लिए कई कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं– जिसमें वनाधिकार कानून, जनजातीय कल्याण छात्रावास, वन धन विकास केंद्र, महिला सहकारी समितियाँ, स्वास्थ्य एवं पोषण योजनाएँ, स्वयं सहायता समूह आदि कार्यक्रम उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान कर रहें हैं।

शिक्षा का विस्तार एवं आर्थिक सशक्तिकरण में प्राथमिक शिक्षा को जनजातीय भाषाओं से जोड़कर सरल बनाया जा रहा हैं। आवासीय विद्यालय और छात्रवृत्ति योजनाओं ने लड़कियो को शिक्षा से जुड़ने में मदद की है। महिलाओं को वनोपज प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, बांस उद्योग, कृषि आधारित तकनीक आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से वे बचत तथा स्व–रोजगार में आगे बढ़ रही है। स्वास्थ्य जागरूकता में सुधार के अंतर्गत आशा कार्यकर्त्ता, आंगनबाड़ी, मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों और टीकाकरण कार्यक्रम आदि जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार ला रहे है।

निष्कर्ष

जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति कई चुनौतियों से घिरी हुई है, लेकिन वे सामाजिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और कानूनी सहायता के विस्तार से उनकी स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। सरकारी प्रयासों, शिक्षा के विस्तार, आर्थिक उन्नति और सामुदायिक जागरूकता से उनकी स्थिति लगातार बेहतर हो रही है। जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण केवल उनके जीवन को ही नहीं

बल्कि पूरे जनजातीय समाज और राष्ट्र के विकास को भी गति प्रदान करेगा। सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों से जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण संभव है, जिससे वे अपने अधिकारों का उपयोग कर एक बेहतर जीवन जी सकेंगी।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जी. के. (2022) *समाजशास्त्र,* साहित्य भवन पब्लिकेशन, अगरा।
2. महाजन, धर्मवीर एवं महाजन, कमलेश (2017) *जनजातीय समाज का समाजशास्त्र,* विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।
3. महाजन, धर्मवीर एवं महाजन, कमलेश (2020) *जनजातीय समाज का समाजशास्त्र,* विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।

****